15/6/21 [illegible]

(1)

B.A. Hindi Hons Part I
मध्यकालीन हिन्दी काव्य

डॉ० अरविन्द कुमार
[illegible] एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस० एस० कॉलेज,
जहानाबाद

तुलसीदास क्रमशः —

1.

तुलसीदास के सिद्धान्त का यह रूप सार्वभौमिक सनातन रूप में है।

रामकथा इस देश में तुलसीदास से पहले भी कई बार कही-सुनी जा चुकी थी। पर तुलसी ने इसे जिस रूप में उपस्थित किया, उसमें पहले का कोई कवि उसे यह रूप नहीं दे पाया था। समाज और युग के अनुरूप इसमें नवीनता का प्रवेश कराकर तुलसी ने रामकथा को नये रूप में राष्ट्र के सामने प्रस्तुत किया। रामराज्य की स्थापना तुलसी की मौलिक देन है। इन्होंने रामराज्य के आलोक में सुंदर भारत निर्माण की बात कही —

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज काहुहि नहिं व्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥

राम के आदर्शवादी रूप को तुलसी हमेशा अपने सामने रखा। जिस युग में नृपसिंहासन के लिए भाई का हत्या भाई के खून से रंगा रहा हो उस युग के लिए भारत की आध्यात्मिकता को बाहकर आदर्श

क्रमशः —

B.A. Part I
Hindi Hons
15/6/21

डॉ० अनन्त कुमार

May 2016
141-225
20
Friday

(3)

तुलसी - क्रमशः -

का चरित्र है। पूरे संसार के साहित्य में राम विरोधी चरित्र बेजोड़ है। तुलसी के चरित्र अपनी सम्पूर्णता में जितने विराट हैं, खंड चित्रों में उतने ही सजीव और विश्वसनीय।

तुलसी ने अपने चरित्र के आलोक में केवल मनुष्य को ही देवता नहीं बनाया बल्कि देवताओं को भी मानवीय धरातल पर उतार कर धरती और स्वर्ग के बीच एक इन्द्रधनुषी सेतु तैयार कर दिया है। राम के चरित्र का मानवीय पक्ष ही उनके व्यक्तित्व का सबसे बड़ा आकर्षण है। सीता का हरण हो जाने पर राम सामान्य मानव की तरह पशु-पक्षियों से सीता का पता पूछते हैं —

हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी
तुम देखी सीता मृगनैनी॥

लक्ष्मण के शक्तिबाण लगने पर भी वे अपने पुरुषार्थ को भूलकर वे सामान्य मानव की तरह विलाप करते हैं —

जैहउँ अवध कौन मुँह लाई।
नारी हेतु प्रिय बंधु गँवाई॥

अयोध्याकांड को 'रामचरित मानस' का हृदय माना गया है। इसको मानस में वही स्थान प्राप्त है जो कामायनी में लज्जा सर्ग को। इस कांड में राम का चरित्र सबसे अधिक लौकिक धरातल पर प्रतिष्ठित है।

महाकवियों का काव्य अपने युग के साथ-साथ युग-युग के लिए भी होता है, वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी होता है।

क्रमशः -